Topic — MEANING AND DEFINITION, CHARACTERISTICS OF SOCIAL GROUP

सामाजिक समूह का अर्थ परिभाषाएं एवं विशेषताएँ

Sol —

समूह विभिन्न रूपों में सभी प्राणियों में और सभी जगह पाये जाते हैं। एक अर्थ में समाज स्वयं एक विशाल समूह है यह समूह विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार ऐसे असंख्य उप-समूहों में विभाजित हो गया है जिसके दर्शन हम नित्य-प्रतिदिन अपने सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होते हैं।

सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ (Meaning and Definitions of Social group) — सामाजिक समूह उन सामाजिक प्राणियों का एक संग्रह है जिनके बीच किसी-न किसी प्रकार का सम्बन्ध पाया जाता है। वास्तव में समूह व्यक्तियों का एक झुण्ड होता है जिसका सबसे छोटा रूप वह है जिसमें दो व्यक्ति होते हैं जैसे पति-पत्नी, माँ-बेटी, शिक्षक-विद्यार्थी आदि इस मानव-झुण्ड या संग्रह का विस्तृत रूप भी हो सकता है, जैसे क्लब, स्कूल, विश्वविद्यालय, जाति, प्रजाति, राष्ट्र आदि परन्तु समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सामाजिक समूह के अर्थ जानने के लिए निम्नलिखित परिभाषाओं का उल्लेख अति आवश्यक है—

सर्वश्री ऑगबर्न और निमकॉफ (Ogburn and Nimkoff) ने सामाजिक समूह की परिभाषा करते हुए लिखा है, "जब कभी भी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक दूसरे को प्रभावित करते हैं, तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं।"

मैकाइवर एवं पेज (MacIver and Page) — के शब्दों में, "समूह से हमारा तात्पर्य मनुष्यों के उस संकलन से है जो एक दूसरे के साथ सामाजिक सम्बंध स्थापित करते हैं।"

आर. बी कैटल (R.B Cattell) ने समूह के सदस्यों के बीच सहयोग का होना अनिवार्य माना है। उनके अनुसार, "समूह व्यक्तियों के उस एकत्रीकरण को कहते हैं जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी

सदस्यों का सहयोग/ सम्बंध लिया जाये।"

प्रो० स्माल (Albion Small) के अनुसार, "समूह का अर्थ व्यक्तियों की किसी भी उस बड़ी अथवा छोटी संख्या से है जिनके बीच इस प्रकार के सम्बंध विद्यमान हो कि उन्हे एक सम्बद्ध इकाई के रूप में सोचा जा सके।"

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते है कि जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी सामान्य जानकारी या मान्यता या उद्देश्य के आधार पर आपस में एक दूसरे से सम्बंध स्थापित करते तथा दूसरे को प्रभावित करते है तो उसे हम 'सामाजिक समूह' कहते है।

सामाजिक समूह की विशेषताएं (characteristics of Social group) —

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर सामाजिक समूह की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया जा सकता है —

(1) एकाधिक व्यक्ति (more than one person) — समूह वह संग्रह है जिसके सदस्य-संख्या कम-से कम दो या दो से अधिक हो। इस अर्थ में एक व्यक्ति अकेले समूह का निर्माण नही कर सकता है पर दो मित्र आपस में मिलकर एक समूह का रूप धारण कर लेंगे। इस प्रकार समूह का आकार उसके सदस्य संख्या से प्रत्यक्ष रूप से सम्बंधित है।

(2) वैयक्तिक सम्पर्क आवश्यक नही (personal Contact is not necessary) — समूह के निर्माण में यह आवश्यक नही है कि समूह के सभी सदस्य एक दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानते पहचानते ही हो। छोटे समूहो जैसे मित्र-मंडली, परिवार में तो व्यक्तिगत सम्पर्क होता है। पर बड़े समूह में ऐसा होना संभव नही है और नही समूह के निर्माण के लिए ऐसा होना आवश्यक है।

(3) सामाजिक सम्बंध का होना अनिवार्य (Social Relation is a must) — समूह के निर्माण के लिए व्यक्तिगत सम्पर्क आवश्यक नही, इसका तात्पर्य यह नही है कि समूह के सदस्यों के बीच कोई सामाजिक संबंध भी नही होता। सामाजिक सम्बंध के बिना समूह का अस्तित्व हो नही सकता। इसलिए समूह, व्यक्तियों के उस संग्रह को कहते है जिसके सदस्यों में किसी सामान्य जानकारी, मान्यता या उद्देश्य के आधार पर पारस्परिक

(4) अन्त: क्रिया का एक निश्चित स्वरूप (A Definite form of Interaction) — प्रत्येक समूह के सदस्यों के बीच अन्त: क्रियात्मक सम्बन्ध पाया जाता है और उस सम्बंध का अपना एक निश्चित स्वरूप होता है उदाहरणार्थ, परिवार के सदस्यों के बीच पाये जाने वाले अन्त: क्रियात्मक सम्बंध का जो स्वरूप होता है, वह एक भीड़ के सदस्यों के बीच पाये जाने वाली अन्त: क्रियात्मक सम्बंध के स्वरूप से निश्चय ही अलग होता है। उसी प्रकार एक बालचर समूह के सदस्यों के बीच तथा एक राजनीतिक समूह के सदस्यों के बीच पायी जाने वाली अन्त: क्रियात्मक सम्बंधों का स्वरूप अलग - अलग ही होता है।

(5) समूह निर्माण का एक निश्चित आधार (Definite Basis of group formation) — प्रत्येक समूह के निर्माण का कोई न कोई आधार अवश्य ही होता है जैसे रक्त सम्बन्ध के आधार पर परिवार - समूह व जाति - समूह, शारीरिक विशेषता के आधार पर लिंग - समूह, आयु - समूह, क्षेत्रीय आधार पर राष्ट्र - समूह आदि का निर्माण होता है, अर्थात प्रत्येक समूह को निर्माण के सम्बन्ध में किसी न किसी आधार को ढूँढा जा सकता है।

(6) समूह की एक संरचना (Structure of the group) — मी० फिचर ने इस बात पर बल दिया है कि अन्य सामाजिक संगठनों की भाँति समूह की भी एक निश्चित संरचना या ढाँचा होता है और उस ढाँचे के अन्तर्गत उस समूह विशेष के सदस्यों की स्थितियाँ निश्चित होती है। समूह के सदस्यों में स्थितियों का यह बटवारा सभी समूहों में बिल्कुल स्पष्ट नही होता है।

(7) ऐच्छिक सदस्यता (Voluntary membership) — अधिकांशत: समूह की सदस्यता ऐच्छिक होती है। वह अपनी इच्छा पर निर्भर है कि वह किसी समूह से अपना सम्बंध जोड़ या तोड़ सकता है। उसी प्रकार एक व्यक्ति कितने समूहों की सदस्यता को स्वीकार करेगा, यह भी उसकी अपनी व्यक्तिगत रुचि व योग्यता पर ही निर्भर करता है पर कुछ इस प्रकार के भी समूह होते हैं जिनकी सदस्यता व्यक्ति को अनिवार्य रूप से ग्रहण करनी होती है।

(8) समान हित, स्वार्थ या उद्देश्य (Common Interest or objective) — एक समूह के सभी सदस्य कोई न कोई समान हित, स्वार्थ या उद्देश्य द्वारा आपस में बंधे होते हैं, जबकि उसे यह ~~आशा~~ आशा हो कि उसके हितों की पूर्ति उस समय में ही हो सकती है।

(9) नियंत्रण का कोई स्वरूप — (Some form of Contro

प्रत्येक समूह अपने सदस्यों के व्यवहारों को नियंत्रित करने के लिए किसी न किसी उपाय को अपनाता है, चाहे वह इस नियंत्रण के लिए प्रथा, परम्परा, सामाजिक नियम, कानून या और कोई औपचारिक या अनौपचारिक साधन को अपनाये यह साधन समूह की प्रकृति के अनुसार अलग-अलग हो सकता है।

(10) **सामाजिक लक्ष्य (Social Aim or goal)** — प्रत्येक समूह के माध्यम से समाज के किसी न किसी सामाजिक लक्ष्य की प्राप्ति सम्भव होती है। वास्तविकता तो यह है कि समाज अपने सभी लक्ष्यों की प्राप्ति विभिन्न सामाजिक समूहों के द्वारा ही करता है। समाज के लक्ष्य समय-समय पर बदलते रहते हैं। अतः समूहों के सामाजिक लक्ष्य भी स्थिर नहीं, परिवर्तनशील होते हैं।

(11) **अस्तित्व की कुछ अवधि (Some Duration of existence)** — समूह की एक और उल्लेखनीय विशेषता यह है कि प्रत्येक समूह के अस्तित्व की कुछ न कुछ अवधि होती है उस अवधि (duration) को नापा जा सकता। यह अवधि कई वर्षों की हो सकती है अथवा केवल कुछ मिनटों की। अतः अवधि के आधार पर सामाजिक समूह को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — एक अपेक्षाकृत स्थायी समूह, जैसे - राष्ट्र या जाति और दूसरा अस्थायी समूह, जैसे - भीड़, श्रोतागण इत्यादि।

समाप्त